कल्पवृक्ष की तलाश में

डॉ. किशोर पंवार

कल्पवृक्ष - जितने मुंह उतनी बातें। जितना पढ़ो उतना भ्रम। कभी लगता है कोरी कल्पना है कल्पवृक्ष। कभी विचार आता है कहीं न कहीं तो ज़रूर होगा। हो सकता है एक विचार हो जिसमें शाब्दिक अर्थ से कहीं ज़्यादा गहराई छिपी हो। लगता है शब्द के अर्थ नहीं उसके मर्म को समझना होगा।

वैसे तो यह एक पौराणिक इच्छा पूर्ति वृक्ष है जो देव और दानवों द्वारा किए गए समुद्र मंथन के दौरान निकला था। इसके साथ कामधेनु, लक्ष्मी, मणि, रंभा, वारूणी, सुधा, शंख, गजराज, शन, शशि, धनु, धनवन्तरी, विष और बाज़ भी निकले थे।

यदि समुद्र मंथन का अर्थ उस काल में की गई समुद्री यात्राओं से लगाया जाए तो सभी वस्तुएं समुद्री या समुद्र के आसपास के द्वीपों पर पाई जाने वाली हैं। प्रायद्वीपी भारत के पश्चिमी तट के साथ हिंद महासागर जुड़ता है जिसके दूसरे तट पर अफ्रीकी महाद्वीप है। इसी यात्रा के दौरान अरब क्षेत्र है जहां के घोड़े प्रसिद्ध हैं। वहां की सुन्दरियां भी मशहूर रही हैं। जंजीबार के शंख बहुत मशहूर हैं। पुराणों में इसी को शंखद्वीप कहा गया है। समुद्री यात्राएं करते-करते जब कोई मध्य अफ्रीका पहुंचता है तो उसे वहां मेरु पर्वत और सोने और हीरे जवाहरात (मणियों) के भंडारों वाले देश मिलते हैं। यहीं पर है अफ्रीका का वह इलाका जहां शाल्मली कुल के प्रसिद्ध विलक्षण अद्भुत कल्पजीवी वृक्ष मिलते हैं। अफ्रीकी हाथी (गजराज) भी यहीं के प्रसिद्ध हैं जो भारतीय हाथियों की तुलना में काफी विशाल और शक्तिशाली हैं।

तो कहीं पुराणों में वर्णित समुद्र मंथन के दौरान खोजा गया कल्पवृक्ष यह अफ्रीकी वृक्ष बाओबाब तो नहीं? दुर्वासा मुनि ने कल्पवृक्ष के नीचे बैठकर तपस्या की थी। कथा में यह ज़िक्र भी है कि इन्द्र इसे अपने साथ स्वर्ग ले गए थे। यानी जहां से आया था वहीं चला गया। ज़रा सोचिए जहां मणियां हों, सुन्दरियां हों, गजराज हों, अद्भुत शंख हों,

क्या बाओबाब ही कल्पवृक्ष है?

अमृत हो और कल्पवृक्ष भी हों तो क्या वह जगह धरती पर स्वर्ग समान न हुई।

कल्पवृक्ष को इच्छापूर्ति वृक्ष भी कहा जाता है। इस कल्पवृक्ष यानी बाओबाब को हम अश्वत्थ मान सकते हैं। यह ज़रूरतमंदों को खाद्य पदार्थ (फल), कपड़ा (छाल), और रहने के स्थान (खोखला तना), पीने के लिए हज़ारों लीटर पानी, जो इसके तने में छेद कर भरा जा सकता है, दवाई के रूप में पत्ते, छाल, गोंद, पीने के लिए मीठा पानी, और रात को खिलकर मदहोश कर देने वाले बड़े-बड़े सुन्दर फूल, जिनसे श्रृंगार किया जा सके, प्रदान करता है। और क्या चाहिए एक इंसान को?

तो क्या यह कल्पवृक्ष न हुआ, जो एक-दो नहीं, सैकड़ों लोगों की दैनिक आवश्यकताएं पूरी करता है आज भी? भारत के कई इलाकों में इसकी पूजा की जाती है। राजस्थान में मांगलियावास में इसके दो बड़े-बड़े पेड़ लगे हैं जिन्हें नर-नारायण की जोड़ी भी कहते हैं। हरियाली अमावस्या के दिन हज़ारों लोग इसे पूजने आते हैं। भारत के समुद्र किनारे आंध्रप्रदेश, पुडुचेरी, दमण-दिव, मुंबई आदि जगहों में इसके वृक्ष मिलते हैं जिन्हें गोरख इमली, खुरासानी इमली आदि नामों से जाना जाता है।

मध्यप्रदेश के प्रसिद्ध पर्यटन स्थल मांडू में तो इसके सैकड़ों वृक्ष ऐतिहासिक महत्त्व की इमारतों के आसपास उगे हैं। इन्हें स्थानीय लोग मांडव की इमली कहते हैं और इनके फूल बेचते हैं। इस वृक्ष का वैज्ञानिक नाम ऐडेनसोनिया डिजिटेटा है। प्रदीप कृष्ण द्वारा लिखित किताब *ट्रीज़ ऑफ देल्ही* में इसे उप सहारा अफ्रीकी द्वीप से अरब व्यापारियों

द्वारा लगभग दस लाख वर्ष पूर्व पश्चिमी समुद्री तट पर लाना बताया गया है। कुछ पेड़ों की उम्र 3000 साल तक आंकी गई है।

पद्म पुराण के अनुसार पारिजात को कल्पवृक्ष कहा गया है हालांकि इसके गुण कल्पवृक्ष से नहीं मिलते। यह इच्छापूरक नहीं है - इससे न रोटी मिलती है, न कपड़ा, न मकान। अतः यह कल्पवृक्ष नहीं हो सकता, न ही यह समुद्र मंथन के दौरान निकला था।

तीसरा वृक्ष जिसे कल्पवृक्ष के नाम से जाना जाता है वह उत्तरांचल में जोशीमठ के पास है। यह एक बड़ा शहतूत का पेड़ है। इसमें भी कल्पवृक्ष के गुण नहीं हैं। इससे फल ज़रूर मिलते हैं, परन्तु मानव की अन्य आवश्यकताएं पूरी नहीं होती। देश के कुछ हिस्सों में बरगद को भी कल्पवृक्ष कहा जाता है। यह तो सच है कि ये वृक्ष विशाल, छायादार एवं दीर्घ जीवी होते हैं। इनसे लकड़ी मिलती है, औषधि मिलती है, फिर भी इन्हें कल्पवृक्ष नहीं माना जा सकता क्योंकि रोटी नहीं मिलती। खाना नहीं मिलता। अन्य जीव जन्तुओं को तो मिलता है पर हमें नहीं।

कल्पवृक्ष का एक अन्य प्रबल दावेदार है नारीयल का पेड़। समुद्र किनारों पर लगे इसके तरह के पेड़ बहु उपयोगी हैं। इनसे लकड़ी, रेशा जिससे कॉयर और छत ढंकने के लिए पत्ते, खाने के लिए मीठा गोला, पीने के लिए पौष्टिक पानी, पानी सूखने पर खोपरा, गुड़ और नारियल तेल सभी मिलते हैं। इतना महत्त्वपूर्ण और बहु उपयोगी पेड़ देश में शायद ही कोई और हो। दक्षिण भारत के तटीय क्षेत्र के निवासियों के लिए तो यही कल्पवृक्ष है, जिससे रोटी, रेशा, मकान व धन सभी मिलता है। परन्तु अद्भुत, विलक्षण एवं रहस्यमयी न होने से यह विशिष्ट पेड़ों की गिनती में नहीं आता। बाओबाब की तरह पुरानी शिल्प कलाओं, जैसे अजंता एवं ऐलोरा की दीवारों पर, इसके उत्कीर्ण भी नहीं देखे गए हैं।

क्या नारियल को कल्पवृक्ष मानें?

कल्पवृक्ष का एक और नया दावेदार वर्तमान में सामने आया है जिसका नाम सीमारूबा है। इसे श्री श्री रविशंकर जी ने 'लक्ष्मीतरू' कहा है। उनके अनुयायी इसका खूब प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। यह मूल रूप से मध्य और उत्तरी अमरीका तथा दक्षिण पूर्वी भारत (उड़ीसा) का निवासी है। यह सदाबहार पेड़ है जो 40-50 फीट ऊंचा हो सकता है। इसका घेरा 25-30 फीट तक होता है। इसमें पीले फूल आते हैं और अंडाकार फल लगते हैं जो जामुनी या पीले सफेद होते हैं। अब सवाल यह है कि इसे कल्पवृक्ष या लक्ष्मीतरू क्यों माना जाए? इससे ढेर सारा अखाद्य तेल प्राप्त होता है क्योंकि इसके बीजों में 60-75 प्रतिशत तक तेल है। इसकी खली नाइट्रोजन से भरपूर है जो खाद का काम करती है। इसका तेल अमरीका में बेकरी उत्पाद बनाने में काम आता है। हमारे यहां इससे वनस्पति घी बना सकते हैं। इसके तेल से जैव ईंधन बनाया जा सकता है और साबुन, डिटरजेंट, ल्युब्रीकेंट आदि में भी उपयोग किया जा सकता है। फल के गूदे में 11 प्रतिशत शर्करा होती है।

गुऐना के आदिवासी सीमारूबा की पत्तियों एवं छाल का प्रयोग सदियों से मलेरिया और पेचिश के उपचार में करते आए हैं। एक अध्ययन के अनुसार इसकी छाल की चाय अमीबा जन्य पेचिश रोकने में सक्षम है। यह *साल्मोनेला* एवं *शिगेला* के खिलाफ भी उपयोगी है। हालांकि लक्ष्मीतरू से तेल प्राप्त किया जा सकता है, इसका औषधीय महत्त्व भी कम नहीं मगर यह कल्पवृक्ष की श्रेणी में फिट नहीं बैठता।

कुल मिलाकर देखा जाए तो पौराणिक अध्ययनों एवं अपने अद्भुत रूप-रंग और दुर्लभता के कारण बाओबाव यानी शाल्मली कुल का *ऐडेनसोनिया* ही इसके करीब बैठता है। दूसरा दावेदार नारीयल है। परन्तु वह दुर्लभ नहीं है। कुल मिलाकर देखें तो सबके अपने-अपने कल्पवृक्ष हैं। ***(स्रोत फीचर्स)***